शिवशक्ति सरस्वती माँ

6. मम्मा ने कभी बाबा को साधारण समझा ही नहीं। बाबा की हर बात को पूर्णत: सम्मान दिया और सम्मान देकर उसका पूरा परिपालन किया। कई बच्चे, बाबा की बात को बहुत साधारण रूप में लेते थे, तो मम्मा सब बच्चों को बिठाकर समझाती थीं कि बाबा को साधारण समझने की कड़ी भूल कभी नहीं करना। बाबा का एक-एक बोल बहुत मूल्यवान है। ऐसे कह कर बच्चों को सभ्यता और अनुशासन सिखाती थीं। मम्मा का बोलने का तरीक़ा बहुत सम्मान, प्यार और मिठास वाला होता था। बच्चों को मम्मा ने रीति-रिवाज़, सभ्यता-संस्कृति सिखाकर लायक बनाया और माँ के रूप में हम बच्चों का गुणों से शृंगार कर बाप के सामने रखा।

7. बाबा के सामने मम्मा मुस्करा कर एवं सिर झुका कर केवल एक बात कहा करती थीं,'हाँ बाबा' अथवा 'जी बाबा', अन्य कोई शब्द ही नहीं। बाबा मम्मा को 'मम्मा' भी कहते थे और 'बच्ची' भी कहते थे। यज्ञ में हमेशा यह रिवाज़ रहा कि बाबा की मुरली से 10 मिनट पहले, क्लास में मम्मा ज्ञान-सितार बजाती थीं, बाद में बाबा आकर ज्ञान-मुरली बजाते थे।

8. मम्मा बहुत गुणवान थीं। वह गुप्त तपस्विनी थीं। देखने में साधारण लगती थीं लेकिन वह गुणों की खान थीं। किसी ने भी मम्मा का मूड ऑफ होते कभी नहीं देखा। बाबा के हर वचन का पालन शीघ्र और सम्पूर्ण रूप से किया करती थीं। मम्मा में पालना की शक्ति अद्भुत थी।

9. मम्मा का जीवन नेचुरल था। उनका स्वभाव बहुत सरल था। मिठास थी उनके व्यवहार में। उनमें सदा यह भाव रहता था कि सबको आगे बढ़ायें। मम्मा हरेक की योग्यता और विशेषता अनुसार वही कार्य दिया करती थीं जो वह सहज कर सके।

10. मम्मा का शिव बाबा के साथ-साथ ड्रामा के ऊपर भी अटल निश्चय था। मम्मा ड्रामा के ऊपर हमें दो-दो घंटे क्लास कराती थीं। मम्मा कहा करती थीं कि जितना बाबा पर निश्चय है उतना ही ड्रामा पर भी निश्चय होना चाहिए, तब ही आप ईश्वरीय जीवन में एकरस अवस्था में रह सकेंगे। मम्मा के सारे जीवन में देखा गया कि ड्रामा पर अटल और अचल होने के कारण वे हमेशा एकरस रहती थीं। पूरे युद्धस्थल (यज्ञ के कारोबार) में बाबा ने मम्मा को ही आगे रखा। यज्ञ ही मम्मा के नाम पर था। स्थापना के हर कार्य में जितनी भी परीक्षायें आयीं मम्मा ने शिवशक्ति सेना का नेतृत्व किया। कितनी भी कठिन परिस्थितियाँ आयीं, विघ्न आये लेकिन मम्मा ने हंसते-हंसते, अचल-अडोल होकर सामना किया और विजय प्राप्त की।